Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

हिन्दी साहित्यकार और स्त्री विमर्श

डॉ. बबीता यादव*

* सहायक प्राध्यापक, नवसंवत विधि महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – 'स्त्री विमर्श' उस साहित्यिक आंदोलन को कहा जाता है, जिसमें स्त्री अस्मिता को केन्द्र में रखकर संगठित रूप में स्त्री साहित्य की रचना की गई हो। हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श अन्य अस्मितामूलक विमर्शों की भांति ही मुख्य विमर्श रहा है जो कि, लिंग विमर्श पर आधारित है। स्त्री विमर्श को अंग्रेजी में फेमिनिज्म कहा गया है। आंदोलन के रूप में इसकी शुरुवात ब्रिटेन और अमेरिका में हुई। 18 वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के दौरान कई संघर्ष हुए उनमें एक संघर्ष स्त्री–पक्ष ने भी किया। उन्होंने धर्मशास्त्र और कानूनों के द्वारा खुद को पुरुषों के मुकाबले शारीरिक और बौद्धिक घरातल पर कमजोर मानने से इंकार कर दिया।

आधुनिक काल में सबसे ज्यादा चर्चा का विषय है – स्त्री विमर्श। पितृसत्तात्मक मानसिकता एवं भूमंडलीकरण के विरुद्ध स्त्रियों ने एक जुट होकर जिस शक्ति का आरंभ किया है, वही नारीवाद या स्त्री विमर्श है। वर्तमान समाज में स्त्रियों का विकास तीव्रगति से हो रहा है। वह अपने दृढ़–निश्चय और कड़ी मेहनत से अपने दम पर बुलदियाँ हासिल कर रही है। और स्त्री की इसी उड़ान से पुरुष वर्ग डर गया है। जहाँ–जहाँ पुरुष का आधिपत्य था वहां भी स्त्रियों ने अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है। स्त्री विमर्श की समर्थक स्त्रियाँ, पुरुष नहीं बनना चाहती। ये स्त्रियाँ अपनी विशिष्ट दैहिक–मानसिक संरचना पर गर्व करती हैं। स्त्रियों के लिए सदियों से रूढ़िवादी परम्पराओं का एक मापदंड है जो दोहरे हैं। और जिन पर पुनर्विचार होना ही चाहिए। ताकि विकास के अवसर सबको समान मिल सके और समानता का अधिकार स्त्रियों को पूर्ण रूप से प्राप्त हो।

आज स्त्री उन क्षेत्रों में भी प्रवेश कर गई है, जिसमें केवल पुरुष ही हुआ करता थे घर और बाहर दोनों क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर रही है। परन्तु जब तक स्त्री स्वयं के लिए विचार नहीं करेंगी और उसके लिए ठोस कदम नहीं उठाएगी तब तक पुरुषसत्तात्मक समाज उसके व्यक्तित्व पर अत्याचार करते रहेगें। पुरुष अपनी सामाजिक स्थिति को सर्वोच्च देखता है और स्त्री को निम्न समझता है। यदि स्त्री अधिक पढ़ी–लिखी, जागरुक, तर्कशील, बुद्धिमान है तो पुरुष को उसके सम्मान का शायद खतरा पैदा हो सकता है। इसी झूठे अहं का शिकार पुरुष समाज यह सब कैसे सहन कर सकता है? कि स्त्री की सामाजिक, आर्थिक स्थिति उससे सर्वोच्च हो जाए या उसके बराबर हो। पुरुष में असुरक्षा की भावना एवं स्त्री को दबाकर और नियंत्रण में रखने की है। परन्तु आज शिक्षित कामकाजी अधिकार सजग अर्थ स्वतंत्र स्त्रियों ने पुरुषों के लिए कई समस्याएं खड़ी कर दी है।

किन्तु नारी स्वतन्त्रता का अर्थ स्वच्छंदता कदापि नहीं है वह पुरुष से मुक्ति नहीं, पुरुष में मुक्ति की आकांक्षा रखती है। और जब तक लेखन का दायित्व उसके हाथ में आया तो उसने अपनी अस्मिता को गरिमायुक्त बनाया होगा।

स्त्री विमर्श से जुड़ी लेखिकाओं को देखना यह है कि मात्र दफ्तरों में काम करने वाली नारी ही स्वतन्त्र नहीं है। क्योंकि स्वतन्त्रता का अहसास आंतरिक होता है। स्त्री की चिंता, आत्मनिर्भरता, आत्म संपन्नता के लिए होना चाहिए न कि, सामाजिक स्थिति में अभिशाप के एक बचाव की तरह इस्तेमाल करके दया बटोरने के लिए।

स्त्री जागरुक हुई और इस जागरुकता को प्रसारित करने में महिला लेखन का बड़ा प्रभाव रहा है। निखरे व्यक्तित्व और स्व–जागरूकता के साथ बड़ी संख्या में स्त्री लेखिकाएँ साहित्य में उतरी है। इन लेखिकाओं के स्त्री पात्र अपने अस्तित्व हेतु चौतन्य हो परम्परागत मूल्यों और पुरुष प्रधान समाज की कुत्सित मान्यताओं से संघर्ष कर रहे है।

मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार – 'स्त्री विमर्श स्त्री के अस्तित्व की खोज है तथा नारी अस्मिता का उद्देश्य अस्तित्व को आधार बनाकर स्त्री का चेतना से युक्त बना व्यक्तिगत स्वतंत्रता का निर्माण करना है।'

महादेवी वर्मा के शब्दों में – 'भविष्य में भारतीय समाज की क्या रूपरेखा हो। उसमें नारी की कैसी स्थिति हो? उसके अधिकारों की क्या सीमा हो? आदि समस्याओं का समाधान आज की जाग्रत और शिक्षित नारी पर निर्भर है..... वह विरोध को ही चरम लक्ष्य मान लें और पुरुष से समझौते के प्रश्न को ही पराजय का पर्याय समझ लें तो जीवन की व्यवस्था अनिश्चित और विकास का क्रम शिथिल होता जाएगा। महादेवी वर्मा स्त्री की उस दशा को उजागर करना चाहती है, जब स्त्री के लिए अन्य अधिकारों की बात ही क्या की जाए? जब उसे जीने के अधिकारों से ही वंचित कर दिया गया था।'

रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में– 'पुरुष अपने अहम के वशीभूत ही स्त्री के वास्तविक स्वरूप से अनभिज्ञ रहा है, और आज तक यदि पुरुष नारी को समझ लेगा तो समाज की सारी विषमताओं का स्वत: ही निराकरण हो जाएगा, आवश्यकता उसे समझने और महसूस करने की है दिनकर पुरुष के झूठे पौरुष को केवल स्त्री पर हावी होना मानते है उसका पुरुषार्थ मात्र स्त्री को परतंत्र बना उस पर अधिकार करने में निहित है।'

मैत्रेयी पुष्पा के अनुसार – 'नारीवाद ही स्त्री विमर्श है। नारी की यथार्थ स्थिति के बारे में चर्चा करना ही स्त्री विमर्श है। मैत्रेयी पुष्पा नारीवाद और स्त्री विमर्श को चिन्तन का ही एक आयाम मानती है और स्त्री से जुड़े इस विद्यान को यथार्थ से जोड़ती है।'

प्रभा खेतान के अनुसार – 'नारीवाद न मार्क्सवाद है और न पूंजीवाद। स्त्री, हर जगह, हर वाद में, फैलाव में है। मगर संस्कृति के विस्तृत फलक पर आज भी वह वस्तुकरण का शिकार है। वस्तुकरण की इस पारम्परिक प्रक्रिया को पुरुष दृष्टि से नहीं बल्कि स्त्री दृष्टि से देखने और समझने की जरूरत है।' प्रभा खेतान स्त्री की वर्तमान स्थिति की जिम्मेदार स्वयं स्त्री को मानती है।

भारतीय चिंतक स्त्रीवाद के माध्यम से स्त्री और पुरुष के मध्य अंतर की गहराई को पाटने का भारतीय महिला लेखिकाओं ने ऐसी रित्रयों की समस्यायों को आधार बनाकर अपने उपन्यासों की रचना की है। विशेष रूप से उषा प्रियंवदा तथा प्रभा खेतान के उपन्यास शेष यात्रा पीली आंधी में भारतीय स्त्री के जीवन के विभिन्न पहलुओं को समग्रता से उजागर किया है।

अंत में पूरे भरोसे के साथ आज यह कहने की स्थिति में है कि वर्तमान सदी की स्त्री लेखिकाओं ने अपने लेखन में आधुनिक स्त्री जीवन के व्यापक आयामों को स्पर्श करते हुए स्त्री संबंधी अनेक पुराने व नये प्रश्नों को उठाया ही नहीं, बल्कि अनेक विकल्पों को भी चिन्हित किया है। कस्बों, गांवों शहरों से लेकर दूर दराज के देशों में काम करने वाली स्त्रियों के त्रासद से अनुभवों को शब्द प्रदान किए है। टी. एस. इलियट के शब्दों में 'इतिहास जहां प्राचीनता में रमता है, वहीं वह भविष्य में दृष्टि भी रखता है।' अत: हम कह सकते है कि आधुनिक युग में स्त्री और पुरुष दोनों स्वतंत्र ईकाई होकर भी एक–दूसरे के पूरक बनकर सही मायने में परिवार को चलाए और समाज के विकास में सहयोग दें। पुरुष को भी स्त्रियों से तालमेल रखकर अपना अहंकार छोड़ना होगा और स्त्रियों को उसके अधिकार देने होंगे तभी हम एक स्वस्थ समाज का रूप देख सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. आधुनिक नारी समाज की नारी चेतना – डॉ. सुशील।
2. स्त्री विमर्श रचनाधर्मिता के संदर्भ में – विनय कुमार पाठक।
3. पितृसत्तात्मकता और स्त्री विमर्श – प्रभा खेतान।
4. भूमंडलीकरण और स्त्री विमर्श – प्रभा खेतान।

****